www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

6551 (2)

जड़ी बूटी विज्ञान का नये सिरे से अनुसंधान

—श्रीराम शर्मा आचार्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

YUG NIRMAN YOJANA, GAYATRI TAPOBHUMI
MATHURA, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जड़ी-बूटी विज्ञान का नये सिरे से अनुसंधान

अन्न, शाक और फल आहार के प्रमुख अंग हैं। आहार से ही रक्त मांस बनता है। उसी के सहारे पुरुषार्थ करना और जीवित रहना बन पड़ता है। अस्तु आहार की अनिवार्यता और महत्ता निर्विवाद है।

इसी शृंखला में एक कड़ी जड़ी-बूटियों की और जुड़ती है। परमेश्वर की अनेकानेक महती अनुकम्पाओं में से एक यह भी है कि रोगों के निवारण और सामर्थ्य के अभिवर्धन हेतु बहुमूल्य जड़ी बूटियां भी जहाँ तहाँ उगती हैं उनके आधार पर मनुष्य अपनी आरोग्य सम्बन्धी समस्याओं का समाधान सहज ही कर सकता है। खनिज सम्पदा का जीवन क्रम में कितना महत्व है यह सभी जानते हैं। धातुएं, रसायन, कोयला, तेल आदि अनेक बहुमूल्य वस्तुएं भू-गर्भ से मिलती है। वे न हों तो कितनी कठिनाई का सामना करना पड़ेगा उसे सभी जानते हैं। ठीक यही बात जड़ी बूटियों के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है। सामान्य वनस्पतियां घास चारे के रूप में पशुओं का और अन्न, शाक के रूप में मनुष्यों का जीवन चलाती हैं। इसलिए उन्हें जीवनाधार कहा गया है। इससे एक कदम आगे बढ़कर जड़ी-बूटियों की बात सामने आती है। खदानों में साधारणतया पत्थर कोयले ही निकलते है पर कहीं-कहीं उन्हीं में बहुमूल्य हीरा, पन्ना जैसे रत्न भी निकल आते हैं। यही बात वनस्पतियों के सुविस्तृत क्षेत्र में जड़ी बूटियों के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है। वे अनेकानेक शारीरिक मानसिक रोगों के निवारण में पूरी तरह समर्थ हैं। इतना ही नहीं उनके सहारे शारीरिक बलिष्ठता मानसिक प्रखरता भी उपलब्ध की जा सकती है। दीर्घायुष्य का लाभ मिल सकता है। उनके सहारे आत्मिक प्रगति का सुयोग भी बनता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महर्षि चरक सुश्रुत, वागभट्ट जैसे दिव्यदर्शी ऋषियों ने अथक परिश्रम करके समस्त धरातल को खोजा और यह ढूँढ़ निकाला था कि किन वनौषधियोंके क्या विशेष गुण हैं और उनसे मनुष्य का किस प्रकार क्या हित साधन हो सकता है ! अपने अनुसंधान, निष्कर्ष एवम् अनुभव का सार उन्होंने आयुर्वेद ग्रन्थों में विस्तार पूर्वक लिखा है। यह ऐसा विज्ञान है कि यदि उसे समझा और अपनाया जा सके तो स्वस्थता अक्षुण्य बनाये रहने का मार्ग अति सरल हो सकता है। उनके सहारे रोगों से छुटकारा पाया और बलिष्ठ रह कर दीर्घायुष्य का लाभ उठाया जा सकता है

इसे दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि इन दिनों एलोपैथी द्वारा प्रतिपादित मारक औषधियों का प्रचलन चल पड़ा है। रोगों का कारण विषाणुओं को माना और उन्हें मारने के लिए एन्टीबायटिक्स का शरसंधाना जाता है। इसका तात्कालिक लाभ तो यह होता है कि विषाणुओं के मारने से रोग का प्रकोप थम जाता है। इसके बदले भारी हानि यह होती है कि आरोग्य रक्षक रक्त कणों की सेना का भी उतना ही संहार होता है शत्रु के साथ मित्र भी मरते हैं। आरोग्य रक्षा जिन स्वास्थ रक्षक जीवाणुओं पर निर्भर है वे यदि मारक औषधियों द्वारा धराशायी बना दिये जायें तो फिर एक नया संकट यह खड़ा होता है कि रोग निरोध की क्षमता ही समाप्त हो जाती है। किसी भी बीमारी को आक्रमण करने की खुली छूट मिल जाती है। यहां तक कि सर्दी गर्मी तक सहन नहीं होती और आये दिन लू लगने, जुकाम होने जैसी शिकायतें रहने लगती हैं। रक्षक जीवाणुओं का भी विनाश करने के मूल्य पर यदि एक बार एक रोग को मार भी लिया गया तो वह तनिक सा लाभ बहुत मंहगा पड़ता है। रक्षक जीव कोषों का विनाश करके तत्काल जादुई लाभ दिखाने वाली चिकित्सा अन्ततः हानिकार ही सिद्ध होती है। इतने पर भी अदूरदर्शिता का समर्थन तत्काल लाभ को ही मिलता है। मारक औषधियों का प्रचलन दिन-दिन बढ़ता ही जा रहा है। फलतः एक रोग दूर होने से पहले ही नए अनेक रोगों का उद्भव आरम्भ हो जाता है। जीवनी शक्ति घटने पर दुर्बलता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

पीछे पड़ जाती है और उसकी सहेली रुग्णता भी वेष बदल कर इर्द गिर्द मंडराती रहती है।

तथा कथित आधुनिक सभ्यता के अनेकानेक अभिशापों में से एक यह भी है कि हमारा ध्यान जड़ी बूटियों की उपयोगिता पर से हट गया और उसके स्थान पर एण्टीबायटिक्स का, अलकोहल सम्मिश्रणों का तीखे इन्जेक्शनों का प्रचलन चला। नशेबाजी को फैशन में सम्मिलित करके हमने कुछ पाया नहीं खोया ही है। ठीक इसी प्रकार जड़ी बूटियों की उपेक्षा करके हमने स्वास्थ्य सुधारा नहीं वरन् उस क्षेत्र में संकट ही खड़ा किया है। यही वह अवलम्बन है जिसे किसी समय हमारे पूर्वजों ने अपनाया था। वे निरोग, समर्थ और दीर्घ जीवी रहते थे। इसी एक आधार पर रक्षक जीव कोषों को बिना किसी प्रकार की हानि पहुँचाये रोगों को निरस्त किया जा सकता है। जड़ी बूटियों की मुख्य विशेषता यह है कि वे जीवनी शक्ति बढ़ाती हैं उस बढ़ी हुई समर्थता के सामने विषाणु टिकते नहीं और सहज ही खदेड़ दिए जाते हैं। इस आधार पर बढ़ाई गई जीवनी शक्ति भविष्य के लिए भी आरोग्य रक्षा की किले बन्दी सुदृढ़ करती है। फलतः चिकित्सा के साथ-साथ समर्थता अभिवर्धन का उपाय उपचार भी बन पड़ता है। जड़ी बूटियां जीवनी शक्ति बढ़ाती हैं। यदि उन्हें शास्त्रीय अनुसंधानों, प्रतिपादनों के आधार पर अपनाया जाय तो माँ के दूध की तरह वह हित साधन ही करती हैं अनिष्ट की संभावना उनमें है नहीं। यों कोई जानबूझकर विष निगले तो बात दूसरी है।

जड़ी बूटियों में से कुछ ऐसी महत्वपूर्ण होती हैं जिन्हें संजीवनी कहा जा सके। लक्ष्मणजी की मेघनाथ के शक्ति बाण से अर्धमृत जैसी स्थिति हो गई थी। स्थिति की गभीरता देखकर रामचन्द जी विलाप करने लगे थे। सुषेण वैद्य को बुलाया गया। उनने हिमालय से एक दिव्य बूटी मंगाने को कहा हनुमान लाये और उपचार से लक्ष्मण पुनः स्वस्थ हो गये। ऐसे ही अन्य प्रसंग भी हैं। बोवृद्ध च्यवनऋषि जर्जर शरीर थे। दुर्भाग्य से उनकी आंखे भी चली गईं। उपचारके लिए अश्विनी कुमार वैद्य आये उनने जड़ी बूटी उपचार किया फलतः उनको नेत्र ज्योति ही नहीं जवानी भी लौट आई। योग का सही नुस्खा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तो उपलब्ध नहीं पर किंवदन्ती के आधार पर उसी घटना का बखान करते हुए 'च्यवनप्राणावलेह' अभी भी बाजार में बिकता है।

राजा दशरथ के सन्तान न थी। श्रृंगी ऋषि ने पुत्रेष्टि [यज्ञ के साथ दिव्य चरु बनाया था। रानियां उस खीर को खाकर गर्भवती हुई थीं। चरु दिव्य औषधियों के संयोग से बना था।

कल्प चिकित्सा के नाम से आयुर्वेद में एक विशिष्ट उपचार पद्धति का वर्णन है। राजा ययाति जैसे वयोवृद्धों को उसी आधार पर तरुण बनाया गया था ऋषियों के आश्चर्यजनक लम्बे जीवन का वर्णन मिलता है। इनमें उनकी सेवा साधना तो प्रधान थी ही, दिव्य जड़ी बूटियों का उपयोग भी सम्मिलित था।

सर्प और न्यौले की लड़ाई के सम्बन्ध में कहा जाता है कि सर्प दंश से आहत होने पर न्यौला एक विशेष जड़ी को खाने दौड़ता है और उससे नई शक्ति पाकर सांप पर नया आक्रमण करता है। न्यौले को जीत का कारण सर्प की तुलना में उसकी समर्थता नहीं वरन् औषधिभिज्ञता ही चमत्कार दिखाती है।

इन दिनों जड़ी-बूटी का महत्व, उपयोग ही नहीं ज्ञान तक आंख से ओझल होता चला जा रहा है। एक जैसी शकल वाली वनस्पतियों को किसी के नाम पर किसी को उखाड़ा बेचा और खरीदा जाता है। पंसारियों की दुकानों पर वे वर्षों पुरानी रखी रहती है। और पहचान सही न होने से एक के स्थान पर दूसरी थमा दी जाती है। वनस्पतियाँ एक वर्ष में गुण हीन हो जाती हैं। होना यह चाहिए कि अवधि समाप्त होने पर गुण हीन हुई वनौषधियों को नष्ट कर दिया जाय। अंग्रेजी दवाओं में यह ईमानदारी अभी भी पाई जाती है कि अवधि समाप्त होने पर उन्हें फेंक दिया जाता है पर जड़ी बूटियां तो बीस तीस वर्ष तक भी यथावत बिकती रहती हैं। गुण हीन होने पर उन्हें फेंक देने की अभी तक कहीं भी व्यवस्था नहीं हो सकी। यही कारण है कि उनका लाभ वैसा नहीं मिलता जैसा कि मिलना चाहिए था।

आवश्यकता यह समझी गई कि जड़ी बूटी विज्ञान को पुनर्जीवित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

किया जाय। आयुर्वेद पाँचवा वेद है। इसे अथर्ववेद की व्याख्या विचेचना कहा जाता है। वेदों के उद्धार का प्रयास सर्व प्रथम यहीं से आरंभ होना चाहिए, आयुर्वेद में मात्र जड़ी बूटियों का उपयोग उपचार है। रस भस्मों का प्रचलन तो बाद का भी है और बाहर से आया हुआ भी।

देव संस्कृति की पुरातन परम्पराओं को नव जीवन प्रदान करने के संदर्भ में शान्तिकुञ्ज द्वारा महत्व पूर्ण सभी जड़ी बूटियों का शोध कार्य नए सिरे से प्रारंभ किया गया है। इसके लिए आश्रम की भूमि में दुर्लभ वनौषधियाँ दूर-दूर से विशेषतया हिमालय क्षेत्र से खोज-खोज कर लाई लगाई गई हैं। इन सभी का रासायनिक विश्लेषण करने के लिए एक सर्वांगपूर्ण प्रयोगशाला वनाई गई है। जिससे हर जड़ी-बूटी के असली नकली होने का उसमें रहने वाले पदार्थों तथा गुणों का वर्गीकरण विश्लेषण हो सके। इस आधार पर यह संभव होगा कि वैज्ञानिक क्षेत्रों को भी जड़ी बूटियों की गुण गरिमा और प्रभाव क्षमता से परिचित प्रभावित किया जा सके।

अगले दिनों विचार यह है कि मिशन द्वारा विनिर्मित २४०० प्रज्ञा पीठों में ऐसे ही जड़ी बूटी उद्यान लगायें जायें और हर क्षेत्र में चिकित्सा एवम् जीवन शक्ति अभिवर्धन के साधन सुलभ कराये जायें।

जड़ी बूटियों में से ऐसी भी अनेक हैं जो मानसिक विशिष्टतायें बढ़ाने के काम आती हैं और आत्मिक प्रगति में सहायता करती हैं। जो ऐसी है उनका बूटी कल्प शान्ति कुञ्ज के साधना सत्रों में आने वालों को कराया जाता है। इससे स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीरों को प्रखर परिष्कृत करने में सफलता भी बहुत मिलती हैं।

किस रोग, में किसे, किस जड़ी बूटी का किस प्रकार प्रयोग करना चाहिए इसका परामर्श शांति कुञ्ज के कुशल चिकित्सक देते रहते हैं। उनका निःशुल्क मार्ग दर्शन हर किसी को सदा उपलब्ध रहता है। कई शारीरिक मानसिक रोगों से ग्रस्त व्यक्ति भी इन शुद्ध और सशक्त वनौषधियों को शांति कुंज से ले जाते हैं, और उनका चमत्कारी सत्परिणाम देखकर अन्यों को भी इनका लाभ लेने के लिए परामर्श देते हैं। कइयों ने तो अपने-अपने क्षेत्र में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इनका उत्पादन योजना बद्ध रूप से आरंभ भी किया है। यह स्वास्थ्य संरक्षण अभिवर्धन की दृष्टि से उज्ज्वल भविष्य का शुभ लक्षण है।

शांति कुञ्ज की जड़ी बूटी प्रयोग शाला ने एकौषधि विज्ञान की पुरातन मान्यता को नए सिरे से बल दिया है एक समय में एक ही वनस्पति सेवन की जाय। एक साथ कइयों को न मिलाया जाय। कइयों के परस्पर मिला देने से उनमें से प्रत्येक का निजी गुण सीमित हो जाता है। सम्मिश्रण से कुछ का कुछ बन जाता है। यह सोचना सही नहीं है कि एक कइयों के मिलाने से उन सब के गुण यथावत बने रहेंगे। सच तो यह है कि सम्मिश्रण के सभी घटक अपनी निजी विशेषता गँवा बैठते हैं और एक नई अप्रत्याशित प्रतिक्रिया खड़ी करते हैं। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए पुरातन आयुर्वेद जन्मदाताओं की तरह शांतिकुंज ने भी इस बात पर जोर दिया है कि एक समय में एक ही वनौषधि का उपयोग किया जाय। उनमें से प्रत्येक अपने-अपने प्रयोजन के लिए पूर्णतया समर्थ है।

एक समय में एक अन्न या एक शाक खाने का सिद्धांत भी इसी प्रकार सही है। कल्प साधना सत्रों के साधकों को यही कराया जाता है वे चावल, दलिया आदि एक वस्तु लेते हैं। मात्र मूंग की दाल का उपयोग करने भर की छूट रहती है। साधकों को बूटी कल्प कराया जाता है। उसमें भी एक ही वनौषधि का निर्धारित अवधि तक प्रयोग होता रहता है। इन प्रयोगों के सभी ने उत्साहवर्धक परिणाम देखे हैं।

यज्ञोपचार में जड़ी बूटियों की हवन सामग्री का ही उपयोग होता है। शान्तिकुंज में यज्ञ विज्ञान की नई शोध चल रही है। उस उपचार की उपयोगिता पर वैज्ञानिक आधार पर नया अनुसंधान अन्वेषण किया गया है। शारीरिक मानसिक एवम् अध्यात्मिक परिष्कार के लिए जिन वनौषधियों को उपयोगी पाया गया है उनका अग्नि होत्र के माध्यम से लाभ प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाता है। ठोस और द्रव की अपेक्षा वायु भूत पदार्थ अधिक सशक्त व्यापक होता है वह रक्त माँस तक सीमित न रह कर जीव कोषों, ज्ञान तन्तुओं, जैव रसायनों, हारमोनों की गहराई तक चला जाता है। इस आधार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर अग्निहोत्र की क्षमता अधिकाधिक स्पष्ट होती चली जा रही है।

इस संदर्भ में नया प्रयोग यह हुआ है कि हवन पदार्थों को धूप बनाकर उसे कमरे में जलाया और लाभ उठाया जाय। यह प्रयोग भी अग्नि होत्र का ही एक छोटा स्वरूप सिद्ध हुआ है। उससे न केवल स्वास्थ्य रक्षा में सहायता मिली है वरन् मानसिक विकास एवम् आत्म परिष्कार में भी यह प्रयोग उपयोगी सिद्ध हुआ है। धूप का देव पूजन में प्रयोग होता रहा है। यह अकारण नहीं है। इस प्रक्रिया को अधिक व्यापक एवं लोकोपयोगी बनाया जा रहा है। अग्नि होत्र प्रयोग के लिए जड़ी बूटियों के उपयोग की पद्धति को पूर्व काल की भाँति अब फिर से प्रयोग में लाया जा रहा है। यह भी शांति कुंज का जड़ी बूटी परक विशिष्ट अनुसंधान है।

इन प्रयोगों के आधार पर आशा की गई है कि आयुर्वेद को पुनः विश्वव्यापी मान्यता मिलेगी। विज्ञान की परीक्षण कसौटी पर वह खरा उतरेगा। चरक, सुश्रुत, वागभट्ट आदि ऋषियों के महान प्रयास पर छाये हुए कुहासे को हटाने वाला नया प्रभात उदय होगा।

क्र०२२२/प्र० युग निर्माण योजना मु० युग निर्माण प्रेस मथुरा, मूल्य ४० पैसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org